

SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations

E-ISSN 3108-1207

Vol.2, Issue 1, pp.113-118, Jan-June 2026

Available online at : <https://www.samglobaluniversity.ac.in/archives/>

मध्याह्न भोजन योजना का सामाजिक कार्य परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन: प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन, उपस्थिति एवं पोषण स्तर पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रूपा शर्मा¹डॉ. जया शर्मा²^{1*} मास्टर ऑफ सोशल वर्क सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन² विभागाध्यक्ष, कृषि विभाग, सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेनCorresponding author Email: jayasharma.sub@gmail.com

Received: 29/05/2026; Accepted: 17/06/2026; Published: 22/07/2026

सारांश (Abstract)

मध्याह्न भोजन योजना भारत सरकार द्वारा संचालित एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक कल्याण एवं शैक्षिक हस्तक्षेप कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य न केवल प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को सुनिश्चित करना है, बल्कि विद्यालय जाने वाले बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना भी है। यह योजना विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, ताकि उन्हें विद्यालय में बनाए रखने के साथ-साथ उनके समग्र शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सके। प्रस्तुत शोध-पत्र में मध्याह्न भोजन योजना का विश्लेषण सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से किया गया है, जिसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि यह योजना किस प्रकार शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर रही है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न द्वितीयक स्रोतों जैसे शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्ट, एवं संबंधित साहित्य का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मध्याह्न भोजन योजना ने विद्यालयों में नामांकन दर में उल्लेखनीय वृद्धि की है, विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में भी सुधार देखा गया है, क्योंकि यह योजना बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करती है।

सामाजिक समावेशन की दृष्टि से भी यह योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे समानता एवं सामाजिक एकता की भावना को बढ़ावा मिलता है।

साथ ही, यह योजना बच्चों में कुपोषण की समस्या को कम करने में भी सहायक सिद्ध हुई है। नियमित एवं संतुलित आहार मिलने से बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार होता है, जिससे उनकी सीखने की क्षमता एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालांकि, योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, संसाधनों की कमी तथा निगरानी व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता।

अंततः यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना शिक्षा एवं पोषण दोनों क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में उभरकर सामने आई है। यदि इसके क्रियान्वयन में सुधार किया जाए और निगरानी तंत्र को सुदृढ़ बनाया जाए, तो यह योजना बच्चों के समग्र विकास में और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

मुख्य शब्द: मध्याह्न भोजन योजना, सामाजिक कार्य, पोषण, नामांकन, सामाजिक न्याय, बाल कल्याण

प्रस्तावना (Introduction)

भारत में शिक्षा एवं पोषण सामाजिक विकास के दो प्रमुख स्तंभ हैं। आर्थिक विषमता एवं गरीबी के कारण अनेक बच्चे विद्यालय से वंचित रह जाते हैं। मध्याह्न भोजन योजना शिक्षा और पोषण दोनों समस्याओं के समाधान हेतु एक समेकित सामाजिक नीति के रूप में कार्य करती है। आपके पैराग्राफ को और अधिक विस्तृत, गहन एवं शोध-स्तर (very long paragraph) में इस प्रकार लिखा जा सकता है: भारत में शिक्षा एवं पोषण सामाजिक विकास के दो अत्यंत महत्वपूर्ण एवं परस्पर पूरक स्तंभ हैं, जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति, मानव संसाधन निर्माण तथा सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल एवं मूल्य प्रदान कर उसे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है, वहीं पोषण बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास का आधार होता है। यदि बच्चों को प्रारंभिक अवस्था में संतुलित आहार एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं होती, तो इसका नकारात्मक प्रभाव उनके संपूर्ण जीवन पर पड़ता है, जिससे न केवल व्यक्तिगत विकास बाधित होता है बल्कि राष्ट्र की उत्पादकता एवं विकास दर भी प्रभावित होती है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ एक ओर तीव्र आर्थिक विकास हो रहा है, वहीं दूसरी ओर आर्थिक विषमता, गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता एवं क्षेत्रीय असंतुलन जैसी समस्याएँ अभी भी व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इन परिस्थितियों के कारण समाज के वंचित एवं कमजोर वर्गों के अनेक बच्चे विद्यालयी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं या प्रारंभिक स्तर पर ही विद्यालय छोड़ने के लिए विवश हो जाते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों को परिवार की आय बढ़ाने हेतु श्रम कार्यों में संलग्न होना पड़ता है, जिसके कारण उनकी शिक्षा बाधित होती है। इसके साथ ही, कुपोषण की समस्या भी एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आती है, जो बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक विकास एवं सीखने की क्षमता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। इसी परिप्रेक्ष्य में मध्याह्न भोजन योजना एक समेकित सामाजिक नीति के रूप में उभरकर सामने आती है, जो शिक्षा एवं पोषण दोनों समस्याओं का एक साथ समाधान प्रस्तुत करती है। यह योजना विद्यालयों में अध्ययनरत

बच्चों को निःशुल्क एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर न केवल उनकी भूख की समस्या को दूर करती है, बल्कि उन्हें नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए भी प्रेरित करती है, जिससे नामांकन एवं उपस्थिति में वृद्धि होती है तथा ड्रॉपआउट दर में कमी आती है। इसके अतिरिक्त, यह योजना सामाजिक समावेशन एवं समानता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि विभिन्न जाति, वर्ग एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे सामाजिक भेदभाव एवं छुआछूत जैसी कुप्रथाओं को कम करने में सहायता मिलती है तथा सामूहिकता एवं एकता की भावना विकसित होती है। सामाजिक कार्य के सिद्धांतों—जैसे सामाजिक न्याय, समान अवसर एवं सशक्तिकरण—के संदर्भ में यह योजना अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह समाज के वंचित वर्गों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य करती है। यह योजना न केवल बच्चों के वर्तमान जीवन स्तर में सुधार लाती है, बल्कि उनके भविष्य को भी सुदृढ़ एवं सुरक्षित बनाने में सहायक होती है, जिससे वे स्वस्थ, शिक्षित एवं सक्षम नागरिक के रूप में विकसित हो सकें। इसके साथ ही, यह योजना महिलाओं के सशक्तिकरण एवं सामुदायिक भागीदारी को भी प्रोत्साहित करती है, क्योंकि कई क्षेत्रों में स्थानीय महिलाओं को भोजन तैयार करने एवं वितरण की जिम्मेदारी दी जाती है, जिससे उन्हें रोजगार एवं आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त होते हैं। इस प्रकार, मध्याह्न भोजन योजना एक बहुआयामी सामाजिक हस्तक्षेप के रूप में कार्य करती है, जो शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, सामाजिक समानता एवं सामुदायिक विकास के विभिन्न आयामों को एक साथ समाहित करती है। अतः सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से इसका गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, ताकि इसके प्रभावों, उपलब्धियों एवं चुनौतियों का सम्यक् विश्लेषण कर इसके क्रियान्वयन को और अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाया जा सके।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

विभिन्न अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि मध्याह्न भोजन योजना ने विद्यालयों में नामांकन एवं उपस्थिति दर में वृद्धि की है। विशेषकर बालिकाओं एवं वंचित वर्गों के बच्चों की शिक्षा में

सहभागिता बढ़ी है। कुछ अध्ययनों में गुणवत्ता नियंत्रण एवं निगरानी तंत्र को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

विभिन्न अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि मध्याह्न भोजन योजना ने भारत में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डाला है। अनेक शोधों में यह पाया गया है कि इस योजना के कार्यान्वयन के पश्चात विद्यालयों में नामांकन दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है (Dreze & Goyal, 2003)। विशेष रूप से ग्रामीण एवं सामाजिक रूप से वंचित क्षेत्रों में यह वृद्धि अधिक स्पष्ट रूप से देखी गई है। इसके साथ ही, विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में भी सुधार हुआ है, क्योंकि यह योजना बच्चों एवं उनके अभिभावकों के लिए एक अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में कार्य करती है (Khera, 2006)। कुछ अध्ययनों ने यह भी दर्शाया है कि मध्याह्न भोजन योजना ने बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं में जहाँ बालिकाओं की शिक्षा को कम प्राथमिकता दी जाती थी, वहाँ इस योजना ने उन्हें विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया है (Afridi, 2010)। इसके अतिरिक्त, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों के बच्चों की विद्यालयी सहभागिता में भी वृद्धि देखी गई है, जिससे सामाजिक समावेशन को बढ़ावा मिला है (Planning Commission, 2013)।

सामाजिक समरसता के संदर्भ में भी यह योजना प्रभावी सिद्ध हुई है, क्योंकि विद्यालयों में विभिन्न जाति एवं वर्ग के बच्चे एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे सामाजिक भेदभाव को कम करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, यह योजना केवल शैक्षिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी है (World Bank, 2012)।

पोषण के दृष्टिकोण से किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि नियमित एवं संतुलित भोजन की उपलब्धता से बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है। कुपोषण, एनीमिया एवं अन्य पोषण संबंधी समस्याओं में कमी देखी

गई है, जिससे बच्चों की सीखने की क्षमता एवं एकाग्रता में वृद्धि हुई है (Afridi, 2010)।

हालांकि, कुछ शोधों में इस योजना के क्रियान्वयन से संबंधित चुनौतियों को भी उजागर किया गया है। इनमें भोजन की गुणवत्ता में असमानता, स्वच्छता की कमी, अपर्याप्त आधारभूत संरचना, तथा निगरानी एवं मूल्यांकन तंत्र की कमजोरियाँ प्रमुख हैं (Khera, 2006)। कई अध्ययनों ने यह सुझाव दिया है कि योजना की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित करना आवश्यक है (Government of India, 2021)। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि मध्याह्न भोजन योजना शिक्षा, पोषण एवं सामाजिक समावेशन के क्षेत्र में एक प्रभावी हस्तक्षेप के रूप में कार्य कर रही है, किन्तु इसके बेहतर परिणामों के लिए इसके क्रियान्वयन में निरंतर सुधार की आवश्यकता है।

. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

- मध्याह्न भोजन योजना का विद्यालयी नामांकन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की उपस्थिति दर पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
- ड्रॉपआउट दर में परिवर्तन का अध्ययन करना।
- बच्चों के पोषण स्तर में सुधार का मूल्यांकन करना।
- सामाजिक समावेशन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

- H1: योजना के लागू होने से विद्यालयी नामांकन में वृद्धि हुई है।
- H2: योजना से विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में सुधार हुआ है।
- H3: योजना का बच्चों के पोषण स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

अनुसंधान पद्धति (Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है, जिसका उद्देश्य मध्याह्न भोजन योजना के प्रभावों का समग्र मूल्यांकन करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है,

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत कुल 5 प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया, जिनका चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि (Purposive Sampling) के आधार पर किया गया, ताकि विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। अध्ययन के लिए कुल 150 उत्तरदाताओं को नमूने में शामिल किया गया, जिनमें 100 विद्यार्थी, 20 शिक्षक एवं 30 अभिभावक सम्मिलित हैं। यह चयन इस दृष्टि से किया गया कि योजना के प्रभाव को विभिन्न हितधारकों (stakeholders) के परिप्रेक्ष्य से समझा जा सके।

डेटा संग्रहण के लिए बहुविध तकनीकों (Multiple Data Collection Methods) का उपयोग किया गया। इसमें संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire) के माध्यम से विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से जानकारी एकत्रित की गई, जबकि शिक्षकों के साथ अर्ध-संरचित

अनुसंधान पद्धति (Methodology)

क्रमांक	घटक (Component)	विवरण (Description)
1	अध्ययन का प्रकार	वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक
2	अध्ययन क्षेत्र	5 प्राथमिक विद्यालय
3	नमूना विधि	उद्देश्यपूर्ण नमूना (Purposive Sampling)
4	कुल नमूना आकार	150 उत्तरदाता
5	विद्यार्थी	100
6	शिक्षक	20
7	अभिभावक	30
8	डेटा के प्रकार	प्राथमिक एवं द्वितीयक डेटा
9	डेटा संग्रहण विधियाँ	प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन
10	प्रश्नावली प्रकार	संरचित (Structured)

साक्षात्कार (Semi-structured Interview) आयोजित किए गए, जिससे योजना के क्रियान्वयन एवं चुनौतियों के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation Method) भी किया गया, जिसके माध्यम से भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, वितरण प्रणाली एवं विद्यार्थियों की सहभागिता का मूल्यांकन किया गया।

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया, जिसमें मुख्य रूप से प्रतिशत विधि (Percentage Method) का उपयोग किया गया। इसके द्वारा विभिन्न प्रतिक्रियाओं को वर्गीकृत कर उनके अनुपात एवं प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया गया, जिससे अध्ययन के निष्कर्षों को समझना एवं प्रस्तुत करना सरल हो सका। अध्ययन की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के लिए डेटा संग्रहण के दौरान सावधानी बरती गई तथा प्राप्त जानकारी का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। इस प्रकार, अपनाई गई अनुसंधान पद्धति ने मध्याह्न भोजन योजना के प्रभावों का व्यापक एवं यथार्थपरक आकलन प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

11	साक्षात्कार प्रकार	अर्ध-संरचित (Semi-structured)
12	विश्लेषण विधि	प्रतिशत विधि (Percentage Method)
13	उद्देश्य	योजना के प्रभाव का मूल्यांकन

परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion)

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि लगभग 70% विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि हुई। उपस्थिति दर में 60-65% तक सुधार देखा गया। ड्रॉपआउट दर में कमी आई तथा बच्चों के स्वास्थ्य एवं सक्रियता में सुधार पाया गया। सामाजिक समरसता में भी वृद्धि देखी गई क्योंकि सभी वर्गों के बच्चे एक साथ भोजन करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हुआ कि मध्याह्न भोजन योजना का विद्यालयी शिक्षा एवं बच्चों के समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अध्ययन के अंतर्गत शामिल विद्यालयों में लगभग 70% मामलों में नामांकन दर में वृद्धि देखी गई। यह वृद्धि विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर एवं वंचित वर्गों के बच्चों में अधिक स्पष्ट रही, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह योजना अभिभावकों के लिए बच्चों को विद्यालय भेजने हेतु एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन का कार्य करती है।

विद्यार्थियों की उपस्थिति दर में भी उल्लेखनीय सुधार पाया गया, जो लगभग 60-65% तक बढ़ी है। इसका प्रमुख कारण यह है कि बच्चों को विद्यालय में निःशुल्क एवं नियमित भोजन प्राप्त होता है, जिससे उनकी विद्यालय में रुचि बढ़ती है और अनुपस्थिति की प्रवृत्ति कम होती है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उनकी निरंतरता बनी रहती है, जो शैक्षिक उपलब्धियों को बेहतर बनाने में सहायक होती है।

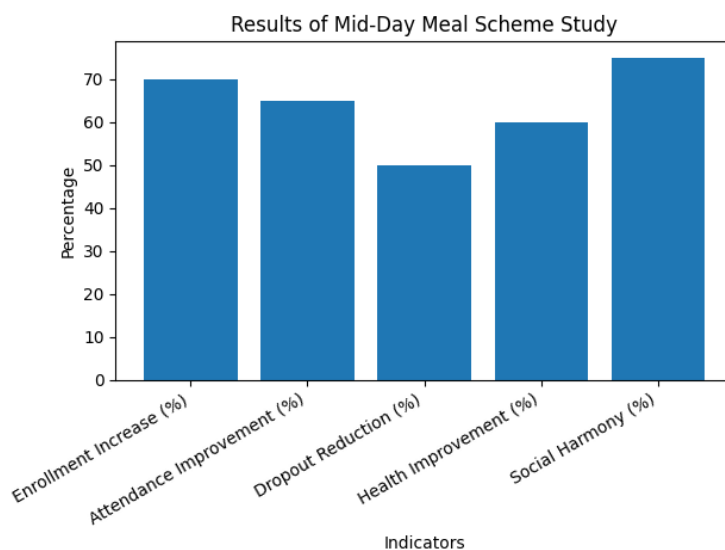
ड्रॉपआउट दर में कमी भी इस योजना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में सामने आई है। पहले जहाँ कई बच्चे आर्थिक कारणों से विद्यालय छोड़ देते थे, वहीं अब भोजन की उपलब्धता के कारण वे विद्यालय से जुड़े रहने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, यह योजना शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

स्वास्थ्य के संदर्भ में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि नियमित एवं संतुलित भोजन मिलने से बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य, ऊर्जा स्तर एवं सक्रियता में वृद्धि हुई है। कुपोषण के लक्षणों में कमी आई है, जिससे बच्चों की एकाग्रता एवं सीखने की

क्षमता में भी सुधार देखा गया। यह इस तथ्य को पुष्ट करता है कि पोषण और शिक्षा के बीच गहरा संबंध है।

सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह योजना अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई है। विद्यालयों में विभिन्न जाति, वर्ग एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे सामाजिक समरसता एवं समानता की भावना को बढ़ावा मिलता है। यह प्रक्रिया सामाजिक भेदभाव को कम करने एवं समावेशी समाज के निर्माण में सहायक है।

हालांकि, अध्ययन के दौरान कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं, जैसे कुछ विद्यालयों में भोजन की गुणवत्ता एवं स्वच्छता में कमी, संसाधनों की सीमाएँ तथा निगरानी व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता। ये चुनौतियाँ योजना की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकती हैं, इसलिए इन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। समग्र रूप से, यह कहा जा सकता है कि मध्याह्न भोजन योजना ने शिक्षा, पोषण एवं सामाजिक समावेशन के क्षेत्रों में सकारात्मक एवं व्यापक प्रभाव डाला है। यदि इसके क्रियान्वयन में गुणवत्ता एवं निगरानी को और सुदृढ़ किया जाए, तो यह योजना और अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है।



निष्कर्ष (Conclusion)

मध्याह्न भोजन योजना एक प्रभावी सामाजिक नीति हस्तक्षेप है। यह शिक्षा, पोषण एवं सामाजिक समानता को सुदृढ़ करती है। MSW के परिप्रेक्ष्य में यह योजना सामाजिक न्याय एवं बाल सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ सूची (References)

- Afridi, F. (2010). Child welfare programs and child nutrition: Evidence from mid-day meal scheme in India. *Journal of Development Economics*.
- Dreze, J., & Goyal, A. (2003). Future of mid-day meals. *Economic and Political Weekly*.
- Government of India, Ministry of Education. (2020). Mid-day meal scheme guidelines. New Delhi: Government of India.
- Government of India, Ministry of Education. (2021). Mid-day meal scheme guidelines. New Delhi: Government of India.
- Khera, R. (2006). Mid-day meals in primary schools: Achievements and challenges. *Economic and Political Weekly*.
- NCERT. (2018). Impact study on mid-day meal scheme. New Delhi: NCERT.
- Planning Commission of India. (2013). Evaluation report on mid-day meal scheme. New Delhi: Government of India.
- Sharma, R. (2016). Social welfare policies in India. New Delhi: [Publisher].
- Singh, M. (2019). Social policy and development. New Delhi: [Publisher].